

रविवार 12 जनवरी, 2025

विषय— धार्मिक संस्कार

स्वर्ण पाठ: प्रेरितों के काम 9: 6

---

"प्रभु, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?"

---

उत्तरदायी अध्ययन: इब्रानियों 3: 1, 2, 4-8, 14

- 1 सोहे पवित्र भाइयों तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो।
- 2 जो अपने नियुक्त करने वाले के लिये विश्वास योग्य था, जैसा मूसा भी उसके सारे घर में था।
- 4 क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है।
- 5 मूसा तो उसके सारे घर में सेवक की नाई विश्वास योग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होने वाला था, उन की गवाही दे।
- 6 पर मसीह पुत्र की नाई उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।
- 7 सो कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो।
- 8 तो अपने मन को कठोर न करो।
- 14 क्योंकि हम मसीह के भागी हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

## पाठ उपदेश

### बाइबल

#### 1. भजन संहिता 123: 1, 2

- 1 हेस्वर्ग में विराजमान मैं अपनी आंखें तेरी ओर लगाता हूं!
- 2 देख, जैसे दासों की आंखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर, और जैसे दासियों की आंखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती हैं, वैसे ही हमारी आंखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर उस समय तक लगी रहेंगी, जब तक वह हम पर अनुग्रह न करे॥

#### 2. गिनती 10: 12 (से)

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

12 तब इस्त्राएली सीनै के जंगल में से निकलकर प्रस्थान करके निकले।

### 3. गिनती 11: 1, 2, 4, 16 (से 2nd), 17 (से:), 18 (से 1st), 21, 22 (से 1st?), 23, 24 (से 2nd), 31 (से 3rd)

- 1 फिर वे लोग बुड़बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; निदान यहोवा ने सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य जल उठी, और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी।  
2 तब मूसा के पास आकर चिल्लाए; और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई,  
4 फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी वह कामुकता करने लगी; और इस्त्राएली भी फिर रोने और कहने लगे, कि हमें मांस खाने को कौन देगा।  
16 यहोवा ने मूसा से कहा, इस्त्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे करा।  
17 तब मैं उतरकर तुझ से वहां बातें करूंगा।  
18 और लोगों से कह, कल के लिये अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें मांस खाने को मिलेगा।  
21 फिर मूसा ने कहा, जिन लोगों के बीच मैं हूं उन में से छः लाख तो प्यादे ही हैं; और तू ने कहा है, कि मैं उन्हें इतना मांस दूंगा, कि वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे।  
22 क्या वे सब भेड़-बकरी गाय-बैल उनके लिये मारे जाएं, कि उन को मांस मिले?  
23 यहोवा ने मूसा से कहा, क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा, कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं।  
24 तब मूसा ने बाहर जा कर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाई।  
31 तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आंधी आई, और वह समुद्र से बटेरें उड़ाके छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई।

### 4. यशायाह 52: 13

- 13 देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊंचा, महान और अति महान हो जाएगा।

### 5. यूहन्ना 9: 1-7, 13-16, 30-33

- 1 फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।  
2 और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?  
3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इस के माता पिता ने: परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों।  
4 जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता।

- 5 जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ।
- 6 यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर।
- 7 उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।
- 13 लोग उसे जो पहिले अन्धा था फरीसियों के पास ले गए।
- 14 जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उस की आंखे खोलीं थी वह सब्त का दिन था।
- 15 फिर फरीसियों ने भी उस से पूछा; तेरी आंखें किस रीति से खुल गई? उस न उन से कहा; उस ने मेरी आंखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैं ने धो लिया, और अब देखता हूँ।
- 16 इस पर कई फरीसी कहने लगे; यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता। औरों ने कहा, पापी मनुष्य क्योंकि ऐसे चिन्ह दिखा सकता है? सो उन में फूट पड़ी।
- 30 उस ने उन को उत्तर दिया; यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते की कहां का है तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं।
- 31 हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उस की इच्छा पर चलता है, तो वह उस की सुनता है।
- 32 जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अन्धे की आंखे खोली हों।
- 33 यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।

## 6. लूका 22: 1, 14, 24-27

- 1 अखमीरी रोटी का पर्व जो फसह कहलाता है, निकट था।
- 14 जब घड़ी पहुंची, तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा।
- 24 उन में यह वाद-विवाद भी हुआ; कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है
- 25 उस ने उन से कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं।
- 26 परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाई और जो प्रधान है, वह सेवक की नाई बने।
- 27 क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाई हूँ।

## 7. रोमियो: 13: 1, 3 (करुंगा), 4 (से 1st.)

- 1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।
- 3 क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण हैं; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उस की ओर से तेरी सराहना होगी।

4 क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है।

## 8. इफिसियों 5: 17, 19-21

- 17 इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है?  
19 और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो।  
20 और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।  
21 और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो॥

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 202: 3-5

ईश्वर और मनुष्य के बीच मौजूद वैज्ञानिक एकता को जीवन-व्यवहार में बदल देना चाहिए, और परमेश्वर की इच्छा सार्वभौमिक रूप से पूरी होनी चाहिए।

### 2. 241: 1 (वह, जो)-4, 19-30

वह, जो ईश्वर की इच्छा या ईश्वरीय विज्ञान की माँगों को जानता है और उनका पालन करता है, ईर्ष्या की शत्रुता को जन्म देता है; और जो परमेश्वर की आज्ञा मानने से इंकार करता है, वह प्रेम से ताड़ित होता है।

सभी भक्ति का तत्व ईश्वरीय प्रेम का प्रतिबिंब और प्रदर्शन है, बीमारी को ठीक करना और पाप को नष्ट करना है। हमारे मास्टर ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

एक उद्देश्य, विश्वास से परे एक बिंदु, सत्य के नक्शेकदम पर चलना चाहिए, स्वास्थ्य और पवित्रता का रास्ता। हमें होरेब की ऊँचाई तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए जहाँ परमेश्वर प्रगट होता है; और सभी आध्यात्मिक भवन की आधारशिला पवित्रता है। आत्मा का बपतिस्मा, मांस की सभी अशुद्धियों के शरीर को धोना, यह दर्शाता है कि शुद्ध हृदय ईश्वर को देखता है और आध्यात्मिक जीवन और उसके प्रदर्शन के करीब पहुँच रहा है।

### 3. 33: 18-26

जब उसमें मानवीय तत्व परमात्मा से संघर्ष करता है, तो हमारे महान शिक्षक ने कहा: "मेरी नहीं लेकिन तेरी ही इच्छा पूरी हो।" — अर्थात्, मांस को नहीं, परन्तु आत्मा को मुझमें दर्शाया जाए यह आध्यात्मिक प्रेम की नई समझ है। यह मसीह, या सत्य के लिए सभी देता है। यह अपने दुश्मनों को आशीर्वाद देता है, बीमारों को चंगा करता है, त्रुटि को मिटाता है, अतिचारों और पापों से मृतकों को उठाता है, और हृदय में नम्र गरीबों को सुसमाचार सुनाता है।

#### 4. 144: 14 (मानव इच्छा शक्ति)-22

मानव इच्छा-शक्ति विज्ञान नहीं है। मानव इच्छाशक्ति तथाकथित भौतिक इन्द्रियों से संबंधित है, और इसका प्रयोग निंदनीय है। बीमारों को स्वस्थ होने की इच्छा करना क्रिश्चियन साइंस का आध्यात्मिक अभ्यास नहीं है, बल्कि यह विशुद्ध पशु चुंबकत्व है। मानव की इच्छा-शक्ति मनुष्य के अधिकारों का उल्लंघन कर सकती है। यह निरंतर बुराई उत्पन्न करता है, तथा यथार्थवाद में इसका कोई योगदान नहीं है। सत्य, न कि भौतिक इच्छा, वह दिव्य शक्ति है जो रोग को कहती है, "शांति, शांत रहो।"

#### 5. 206: 10 (इच्छा-शक्ति)-14

इच्छा-शक्ति सभी बुराइयों में सक्षम है। वह कभी बीमारों को चंगा नहीं कर सकता, क्योंकि वह अधर्मियों की प्रार्थना है; जबकि भावनाओं का अभ्यास - आशा, विश्वास, प्रेम - धर्मियों की प्रार्थना है। इंद्रियों के बजाय विज्ञान द्वारा शासित यह प्रार्थना बीमारों को ठीक करती है।

#### 6. 11: 1-21

कई लोग कल्पना करते हैं कि क्रिश्चियन साइंस में शारीरिक उपचार की घटनाएं मानव मन की क्रिया का केवल एक चरण प्रस्तुत करती हैं, जिसकी क्रिया किसी अस्पष्ट तरीके से रोग के उपचार में परिणत होती है। इसके विपरीत, क्रिश्चियन साइंस तर्कपूर्ण ढंग से समझाता है कि अन्य सभी रोगात्मक विधियां पदार्थ में मानवीय विश्वास का फल हैं, आत्मा के नहीं, बल्कि शारीरिक मन के कार्यों में विश्वास का फल हैं, जिसे विज्ञान के आगे झुकना ही होगा।

क्रिश्चियन साइंस के फिजिकल हीलिंग अब परिणाम है, यीशु के समय के अनुसार, ईश्वरीय सिद्धांत के संचालन से, इससे पहले कि पाप और बीमारी मानवीय चेतना में अपनी वास्तविकता खो देते हैं और स्वाभाविक रूप से गायब हो जाते हैं और आवश्यक रूप से अंधेरा प्रकाश और पाप को सुधार के लिए जगह देता है। अब, अतीत की तरह, ये शक्तिशाली कार्य अलौकिक नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च प्राकृतिक हैं। वे इमैनुअल, या "भगवान हमारे साथ है," का संकेत हैं — मानवीय चेतना में मौजूद एक दिव्य प्रभाव और खुद को दोहराते हुए, अब जैसा कि वादा किया गया था, आ रहा है,

कि बन्धुओं को छुटकारे का और  
अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार  
प्रचार करूं और कुचले हुआ को छुड़ाऊं।

#### 7. 40: 25-30

हमारे स्वर्गीय पिता, दिव्य प्रेम, मांग करते हैं कि सभी पुरुषों को हमारे गुरु और प्रेरितों के उदाहरण का पालन करना चाहिए न कि केवल उनके व्यक्तित्व की पूजा करनी चाहिए। यह दुखद है कि वाक्यांश ईश्वरीय सेवा आम तौर पर दैनिक कर्मों के बजाय सार्वजनिक पूजा का मतलब है।

## 8. 51: 19-32

उनका घाघ उदाहरण हम सभी के उद्धार के लिए था, लेकिन केवल उन कार्यों को करने के माध्यम से जो उन्होंने किए और दूसरों को करना सिखाया। उपचार में उनका उद्देश्य केवल स्वास्थ्य को बहाल करना ही नहीं था, बल्कि अपने दिव्य सिद्धांत को प्रदर्शित करना भी था। वह परमेश्वर से, सत्य और प्रेम से, जो कुछ उसने कहा और किया, उससे प्रेरित था। उनके उत्पीड़कों का उद्देश्य गर्व, ईर्ष्या, क्रूरता और प्रतिशोध था, जो भौतिक यीशु को दिया गया था, लेकिन उनका लक्ष्य ईश्वरीय सिद्धांत, प्रेम था, जिसने उनकी कामुकता को फटकार लगाई।

यीशु निःस्वार्थ था। उनकी आध्यात्मिकता ने उन्हें कामुकता से अलग कर दिया, और स्वार्थी भौतिकवादी को उनसे घृणा करने के लिए प्रेरित किया; परन्तु यह आत्मिकता ही थी जिसने यीशु को बीमारों को चंगा करने, बुराई को दूर करने और मरे हुएों को जिलाने में सक्षम बनाया।

## 9. 168: 15-23

क्योंकि मानव निर्मित प्रणालियाँ इस बात पर जोर देती हैं कि मनुष्य बीमार और बेकार हो जाता है, पीड़ित होता है और मर जाता है, सभी ईश्वर के नियमों के अनुरूप होते हैं, तो क्या हम इस पर विश्वास करते हैं? क्या हम एक ऐसे अधिकारी पर विश्वास करते हैं जो पूर्णता से संबंधित भगवान की आध्यात्मिक आज्ञा को अस्वीकार करता है, — एक अधिकार जो यीशु को झूठा साबित हुआ? उसने पिता की इच्छा पूरी की। उन्होंने कहा कि बीमारी कानून कहा जाता है, लेकिन भगवान के कानून, मन के कानून के अनुसार की रक्षा में बीमारी चंगा।

## 10. 349: 3-12

जैसे पौलुस ने प्राचीन काल में विश्वासघातियों के विषय में पूछा था, वैसे ही वर्तमान समय के रब्बी हमारी चंगाई और शिक्षा के विषय में पूछते हैं, "क्या व्यवस्था न मानकर, परमेश्वर का अनादर करता है?" हालाँकि, हमारे पास सुसमाचार है, और हमारे मास्टर ने इसके विपरीत उपचार करके भौतिक कानून को रद्द कर दिया। हम मास्टर के उदाहरण का पालन करने का प्रस्ताव करते हैं। हमें भौतिक नियमों को आध्यात्मिक नियमों के अधीन करना चाहिए। क्रिश्चियन साइंस के दो आवश्यक बिंदु हैं, कि न तो जीवन मरता है और न ही मनुष्य मरता है, और यह कि ईश्वर बीमारी का लेखक नहीं है।

## 11. 37: 16-25

यीशु के तथाकथित अनुयायी कब उसके सभी मार्गों में उसका अनुसरण करना और उसके महान कार्यों का अनुकरण करना सीखेंगे? जिन लोगों ने उस धर्मी व्यक्ति की शहादत प्राप्त की थी, वे उसके पवित्र जीवन को एक विकृत सैद्धांतिक मंच में बदल देना चाहते थे। हो सकता है कि आज के ईसाई उस करियर के अधिक व्यावहारिक महत्व को अपनाएं! यह संभव है, - हाँ, यह प्रत्येक बच्चे, पुरुष और महिला का कर्तव्य और

विशेषाधिकार है, - कि उन्हें कुछ हद तक स्वास्थ्य और पवित्रता के सत्य और जीवन के प्रदर्शन द्वारा मास्टर के उदाहरण का पालन करना चाहिए।

## 12. 371: 22-23 (से;), 27-32

क्रिश्चियन साइंस के दावों पर जोर देते हुए मैं कोई असंभव बात नहीं पूछता; ... दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके "हर तिनका को पूरा" कर सकते हैं।

## 13. 17: 1-3

तुम्हारी इच्छा पृथ्वी में हो, जैसा कि स्वर्ग में है।

जैसा कि स्वर्ग में पृथ्वी पर भी है, हमें यह जानने में सक्षम करें, कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सर्वोच्च है।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को

प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6